अव्यय (Indeclinables)

परिभाषा : ऐसे शब्द जिनमें लिंग, वचन, पुरुष, कारक आदि के कारण कोई विकार नहीं आता, अव्यय कहलाते हैं।

ये शब्द सदैव अपरिवर्तित, अविकारी एवं अव्यय रहते हैं। इनका मूल रूप स्थिर रहता है, कभी बदलता नहीं। जैसे—आज, कब, इधर, किन्तु, परन्तु, क्यों, जब, तब, और, अतः, इसलिए आदि।

अव्यय के भेद : अव्यय के चार भेद हैं :

1. क्रिया विशेषण *(Adverb)* : जो शब्द क्रिया की विशेषता बतलाते हैं, उन्हें क्रिया विशेषण कहा जाता है।

अर्थ के आधार पर क्रिया विशेषण चार प्रकार के होते हैं :

(a) स्थानवाचक

स्थितिवाचक	यहाँ, वहाँ, भीतर, बाहर।
दिशावाचक	इधर, उधर, दाएं, बाएं।

(b) कालवाचक

समयवाचक	आज, कल, अभी, तुरन्त।
अवधिवाचक	रात भर, दिन भर, आजकल, नित्य।
बारंबारतावाचक	हर बार, कई बार, प्रतिदिन।

(c) परिमाणवाचक

अधिकताबोधक	बहुत, खूब, अत्यन्त, अति।
न्यूनताबोधक	जरा, थोड़ा, किंचित्, कुछ।
पर्याप्तिबोधक	बस, यथेष्ट, काफी, ठीक।
तुलनाबोधक	कम, अधिक, इतना, उतना।
श्रेणीबोधक	बारी-बारी, तिल-तिल, थोड़ा-थोड़ा।

(d) रीतिवाचक

ऐसे, वैसे, जैसे, मानो, धीरे, अचानक, कदाचित्, अवश्य, इसलिए, तक, सा, तो, हाँ, जी, यथासम्भव।

2. सम्बन्धबोधक *(Preposition)* : जो अव्यय किसी संज्ञा के बाद आकर उस संज्ञा का संबंध वाक्य के दूसरे शब्द से दिखाते हैं, उन्हें संबंध बोधक कहते हैं। जैसे—वह दिन भर काम करता रहा। मैं विद्यालय तक गया था। मनुष्य पानी के बिना जीवित नहीं रह सकता।

अर्थ के आधार पर सम्बन्धबोधक अव्यय के चौदह प्रकार हैं—

स्थानवाचक	आगे, पीछे, निकट, समीप, सामने, बाहर
दिशावाचक	आसपास, ओर, तरफ, दायाँ, बायाँ
कालवाचक	पहले, बाद, आगे, पश्चात, अब, तक
साधनवाचक	द्वारा, माध्यम, सहारे, जरिए, मार्फत
उद्देश्यवाचक	लिए, वास्ते, हेतु, निमित्त
व्यतिरेकवाचक	अलावा, अतिरिक्त, सिवा, बगैर, बिना, रहित
विनिमयवाचक	बदले, एवज, स्थान पर, जगह पर
सादृश्यवाचक	समान, तुल्य, बराबर, योग्य, तरह, सरीखा
विरोधवाचक	विरोध, विरुद्ध, विपरीत, खिलाफ
साहचर्यवाचक	साथ, संग, सहित, समेत
विषयवाचक	संबंध, विषय, आश्रय, भरोसे
संग्रहवाचक	लगभग, भर, मात्र, तक, अन्तर्गत
तुलनावाचक	अपेक्षा, बनिस्बत, समक्ष, समान
कारणवाचक	कारण, परेशानी से, मारे, चलते

3. समुच्चयबोधक *(Conjunction)* : दो वाक्यों को परस्पर जोड़ने वाले शब्द समुच्चयबोधक अव्यय कहे जाते हैं। जैसे—

सूरज निकला और पक्षी बोलने लगे।

Scanned with CamScanner

यहाँ 'और' समुच्चयबोधक अव्यय है।

समुच्चयबोधक अव्यय मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं :

(i) समानाधिकरण (ii) व्यधिकरण

पुनः समानाधिकरण समुच्चयबोधक के चार उपभेद हैं :

संयोजक	और, व, एवं, तथा।
विभाजक	या, वा, अथवा, किंवा, नहीं तो।
विरोधदर्शक	पर, परन्तु, लेकिन, किन्तु, मगर, बल्कि, वरन्।
परिणामदर्शक	इसलिए, अतः, अतएव।

व्यधिकरण समुच्चयबोधक के भी चार उपभेद हैं :

कारणवाचक	क्योंकि, चूँकि, इसलिए कि।
उद्देश्यवाचक	कि, जो, ताकि, जिससे।
संकेतवाचक	जो...तो, यदि...तो, यद्यपि...तथापि।
स्वरूपवाचक	कि, जो, अर्थात्, यानी।

4. विस्मयादिबोधक (Interjection) : जिन अव्ययों से हर्ष, शोक, घृणा, आदि भाव व्यंजित होते हैं तथा जिनका संबंध वाक्य के किसी पद से नहीं होता, उन्हें विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं, जैसे—हाय ! वह चल बसा।

इस अव्यय के निम्न उपभेद हैं :

हर्षबोधक	वाह !, अहा !, धन्य !, शाबाश !, क्या!
शोकबोधक	हाय !, हा! आह !, उफ़, [illegible] आदि आदि।
आश्चर्यबोधक	ऐ !, क्या !, ओहो !, हैं !
स्वीकारबोधक	हाँ !, जी हाँ !, अच्छा !, जी !, ठीक !
अनुमोदनबोधक	ठीक !, अच्छा !, हाँ हाँ ! हाँ!
तिरस्कारबोधक	छि !, हट !, धिक्, धुत !
संबोधनबोधक	अरे !, रे !, री !, भाई !, अजी !, हे !, अहो !

निपात : मूलतः निपात का प्रयोग अव्ययों के लिए होता है। लेकिन ये शुद्ध अव्यय नहीं होते। इनका कोई लिंग, वचन नहीं होता। निपातों का प्रयोग निश्चित शब्द, शब्द-समूह या पूरे वाक्य को अन्य (अतिरिक्त) भावार्थ प्रदान करने के लिए होता है। निपात सहायक शब्द होते हुए भी वाक्य के अंग नहीं होते। पर वाक्य में इनके प्रयोग से उस वाक्य का सम्पूर्ण अर्थ प्रभावित होता है। निपात नौ प्रकार के होते हैं—

स्वीकृतिबोधक	हाँ, जी, जी हाँ।
नकारबोधक	जी नहीं, नहीं।
निषेधात्मक	मत।
प्रश्नबोधक	क्या।
विस्मयादिबोधक	क्या, काश।
तुलनाबोधक	सा।
अवधारणाबोधक	ठीक, करीब, लगभग, तकरीबन।
आदरबोधक	जी।
बलदायक	भी, ही, तो, तक, मात्र, सिर्फ, केवल।

हिन्दी में अधिकांशतः निपात उस शब्द या शब्द-समूह के बाद आते हैं, जिनको वे विशिष्टता या बल प्रदान करते हैं, जैसे—

रमेश ने ही मुझे मारा था। (अर्थात् रमेश के अलावा और किसी ने नहीं मारा था।)

रमेश ने मुझे ही मारा था। (अर्थात् मुझे ही मारा था और किसी को नहीं।)

रमेश ने मुझे मारा ही था। (अर्थात् मारा ही था गाली आदि नहीं दी थी।)

Scanned with CamScanner

इस प्रकार निपात वाक्यों में नया अथवा गहन भाव प्रकट करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अव्यय का पद-परिचय *(Parsing of Indeclinables)*: वाक्य में अव्यय का पद-परिचय देने के लिए अव्यय, उसका भेद, उससे संबंध रखने वाला पद—इतनी बातों का उल्लेख करना चाहिए। जैसे—वह धीरे-धीरे चलता है।

धीरे-धीरे—अव्यय, क्रिया विशेषण, रीतिवाचक, क्रिया चलता की विशेषता बताने वाला।

Scanned with CamScanner